UP Board Class 12 Hindi 2026 (Set 301 BB) Question Paper with Solutions

General Instructions

(i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It comprises 16 single-correct multiple-choice questions.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). 'कीर्तिलता' के रचनाकार हैं

(A) रामप्रसाद निरंजनी

(B) अमीर खुसरो

(C) सदल मिश्र

(D) विद्यापति

Correct Answer: (D) विद्यापति

Solution:

Step 1: समझना:
'कीर्तिलता' मैथिली मिश्रित अवहट्ट भाषा में रचित काव्य है, जिसके रचयिता विद्यापति हैं।

Final Answer:
सही उत्तर है — विद्यापति

1(b). हिन्दी के पहले समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' के सम्पादक हैं

(A) किशोरी लाल गोस्वामी

(B) पं० प्रताप नारायण मिश्र

(C) पं० जुगल किशोर शुक्ल

(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (C) पं० जुगल किशोर शुक्ल

Solution:

Step 1: समझना:
'उदन्त मार्तण्ड' हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र था, जिसका प्रकाशन 30 मई 1826 को कलकत्ता से पं० जुगल किशोर शुक्ल ने आरम्भ किया।

Final Answer:
सही उत्तर है — पं० जुगल किशोर शुक्ल

1(c). 'हठी हमीर' नाटक है

(A) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का

(B) प्रताप नारायण मिश्र का

(C) बालकृष्ण भट्ट का

(D) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' का

Correct Answer: (C) बालकृष्ण भट्ट का

Solution:

Step 1: समझना:
'हठी हमीर' ऐतिहासिक नाटक भारतेन्दु युग के प्रमुख नाटककार बालकृष्ण भट्ट की रचना है।

Final Answer:
सही उत्तर है — बालकृष्ण भट्ट

1(d). 'रेल का विकट खेल' के नाटककार हैं

(A) बालकृष्ण भट्ट

(B) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(C) प्रेमचन्द

(D) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

Correct Answer: (B) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

Solution:

Step 1: समझना:
'रेल का विकट खेल' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित एक हास्य-व्यंग्य प्रहसन है, जो रेल-यात्रा की कठिनाइयों पर आधारित है।

Final Answer:
सही उत्तर है — भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

1(e). 'जहाज का पंछी' किसका उपन्यास है?

(A) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का

(B) इलाचन्द्र जोशी का

(C) जैनेन्द्र का

(D) मोहन राकेश का

Correct Answer: (B) इलाचन्द्र जोशी का

Solution:

Step 1: समझना:
'जहाज का पंछी' मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी की प्रसिद्ध रचना है।

Final Answer:
सही उत्तर है — इलाचन्द्र जोशी

2(a). 'तुलसीदास' किसकी कविता है?

(A) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की

(B) सुमित्रानन्दन पंत की

(C) गोस्वामी तुलसीदास की

(D) महादेवी वर्मा की

Correct Answer: (A) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की

Solution:

Step 1: समझना:
'तुलसीदास' शीर्षक कविता निराला द्वारा तुलसीदास के जीवन-संघर्ष पर केन्द्रित एक प्रसिद्ध प्रबन्ध-काव्यात्मक रचना है (न कि स्वयं तुलसीदास की रचना)।

Final Answer:
सही उत्तर है — सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

2(b). 'एक तारा' कविता के रचनाकार हैं

(A) हरिवंशराय बच्चन

(B) सुमित्रानंदन पंत

(C) जयशंकर प्रसाद

(D) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Correct Answer: (D) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Solution:

Step 1: समझना:
(टिप्पणी: यह एक कम-प्रचलित शीर्षक है; उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर यह छायावादी शैली की कविता 'एक तारा' निराला की रचनाओं से सर्वाधिक मेल खाती है, किन्तु मूल पाठ्यपुस्तक से पुष्टि करना उचित रहेगा।) निराला की काव्य-शैली में अकेलेपन और आत्म-संघर्ष के प्रतीक के रूप में तारे का बिम्ब बार-बार आता है।

Final Answer:
सही उत्तर है — सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (सत्यापन अनुशंसित)

2(c). 'मिलनयामिनी' के रचनाकार हैं

(A) हरिवंशराय बच्चन

(B) अमीर खुसरो

(C) विद्यापति

(D) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

Correct Answer: (A) हरिवंशराय बच्चन

Solution:

Step 1: समझना:
'मिलनयामिनी' हरिवंशराय बच्चन का काव्य-संग्रह है, जो 'मधुशाला', 'मधुबाला' त्रयी की अगली कड़ी के रूप में प्रेम और मिलन के भावों पर केन्द्रित है।

Final Answer:
सही उत्तर है – हरिवंशराय बच्चन

2(d). 'माखनलाल चतुर्वेदी' की रचना है

(A) युगचरण

(B) निशा-निमन्त्रण

(C) क्या भूलूँ क्या याद करूँ

(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (A) युगचरण

Solution:

Step 1: समझना:
'युगचरण' माखनलाल चतुर्वेदी का प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है। ('निशा-निमन्त्रण' इलाचन्द्र जोशी की तथा 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' हरिवंशराय बच्चन की रचना है।)

Final Answer:
सही उत्तर है – युगचरण

2(e). 'देख रहा हूँ आज विश्व को मैं ग्रामीण नयन से' किसकी पंक्ति है?

(A) धर्मवीर भारती

(B) मैथिलीशरण गुप्त

(C) त्रिलोचन शास्त्री

(D) सुमित्रानंदन पंत

Correct Answer: (D) सुमित्रानंदन पंत

Solution:

Step 1: समझना:
(टिप्पणी: सटीक स्रोत का सत्यापन पाठ्यपुस्तक से करना उचित रहेगा) यह पंक्ति ग्राम्य-जीवन और प्रकृति के प्रति सहज दृष्टिकोण की झलक देती है, जो सुमित्रानन्दन पंत की काव्य-प्रवृत्ति से मेल खाती है।

Final Answer:
सही उत्तर है — सुमित्रानंदन पंत (सत्यापन अनुशंसित)

3. गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: "विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय है कि राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे। तभी मातृभूमि की पुष्कल समृद्धि और समग्र रूपमंडन प्राप्त किया जा सकता है।" (क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक के नाम लिखिए। (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (ग) 'रीता' और 'पुष्कल' शब्दों के अर्थ लिखिए। (घ) मातृभूमि की पुष्कल समृद्धि किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है? (ङ) हमारा क्या ध्येय है?

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: पाठ एवं लेखक:
यह गद्यांश राष्ट्र-निर्माण में विज्ञान और उद्यम की भूमिका पर केन्द्रित एक प्रेरक निबन्धांश है; (टिप्पणी: मूल पाठ का सटीक नाम/लेखक निर्धारित पाठ्यपुस्तक से सत्यापित किया जाना चाहिए)।

Step 2: रेखांकित अंश की व्याख्या:
लेखक कहना चाहता है कि यह कार्य सुस्ती से नहीं, बल्कि उत्साह, प्रसन्नता और निरन्तर परिश्रम से ही आगे बढ़ाया जा सकता है — राष्ट्र-निर्माण एक सतत प्रक्रिया है।

Step 3: शब्दार्थ:
'रीता' का अर्थ है खाली/बिना योगदान के, और 'पुष्कल' का अर्थ है प्रचुर/अत्यधिक।

Step 4: समृद्धि कैसे प्राप्त हो:
जब राष्ट्र का प्रत्येक हाथ (नागरिक) विज्ञान और उद्यम के कार्य में प्रसन्नतापूर्वक और अथक परिश्रम से भाग ले, तभी मातृभूमि की पुष्कल समृद्धि सम्भव है।

Final Answer:
हमारा ध्येय है कि राष्ट्र का कोई भी नागरिक राष्ट्र-निर्माण के कार्य में योगदान दिये बिना निष्क्रिय न रहे।

OR

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: "भाग्य को भी मैं इसी तरह मानता हूँ। वह तो विधाता का ही दूसरा नाम है। वे सर्वान्तर्यामी और सार्वकालिक रूप में हैं, उनका अस्त ही कब है कि उदय हो। यानी भाग्य के उदय का प्रश्न सदा हमारी अपनी अपेक्षा से है। धरती का रुख सूरज की तरफ हो जाय, यही उसके लिए सूर्योदय है। ऐसे ही मैं मानता हूँ कि हमारा मुख सही भाग्य की तरफ हो जाय तो इसी को भाग्योदय कहना चाहिए।" (क) पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए। (ख) भाग्य किसका दूसरा नाम है? (ग) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (घ) भाग्य के उदय का प्रश्न किससे है? (ङ) 'सर्वान्तर्यामी' और 'सार्वकालिक' शब्दों के अर्थ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: पाठ एवं लेखक:
यह अंश भाग्य और पुरुषार्थ के सम्बन्ध पर आधारित एक चिन्तनपरक निबन्ध से लिया गया है (मूल पाठ्यपुस्तक से सत्यापन अनुशंसित)।

Step 2: भाग्य किसका दूसरा नाम है:
लेखक के अनुसार भाग्य विधाता का ही दूसरा नाम है।

Step 3: व्याख्या:
विधाता सदैव, हर समय विद्यमान रहते हैं; उनका न कभी अस्त होता है न उदय — अतः भाग्य का 'उदय होना' वास्तव में हमारी अपनी दृष्टि/प्रयास के सही दिशा में मुड़ने पर निर्भर करता है, जैसे सूर्य सदा रहता है, धरती का रुख उसकी ओर होने से ही सूर्योदय प्रतीत होता है।

Step 4: प्रश्न किससे है:
भाग्य के उदय का प्रश्न हमारी अपनी अपेक्षा/दृष्टिकोण और पुरुषार्थ से है, बाहरी शक्ति से नहीं।

Final Answer:
सर्वान्तर्यामी = सबके भीतर व्याप्त रहने वाला; सार्वकालिक = सभी कालों में सदा विद्यमान रहने वाला।

4. पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: "मर्त्य मानव की विजय का तुर्य हूँ मैं, उर्वशी अपने समय का सूर्य हूँ मैं। अंध, तम के भाल पर पावक जलाता हूँ, बादलों के शीस पर स्यंदन चलाता हूँ। पर न जाने बात क्या है! इंद्र का आयुध पुरुष जो झेल सकता है, सिंह से बाँहें मिलाकर खेल सकता है। फूल के आगे वही असहाय हो जाता, शक्ति के रहते हुए निरुपाय हो जाता।" (क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ और रचयिता का नाम लिखिए। (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (ग) 'स्यंदन' व 'आयुध' शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए। (घ) प्रस्तुत पंक्तियों में कौन किसको सम्बोधित करके कह रहा है? (ङ) उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: पाठ और रचयिता:
'उर्वशी' शीर्षक में उर्वशी का उल्लेख तथा वीरतापूर्ण आत्म-कथन की शैली से यह अंश रामधारी सिंह 'दिनकर' रचित काव्य से प्रतीत होता है, जिसमें पुरुरवा मानवीय

शक्ति और उसकी सीमाओं का वर्णन करता है (मूल पाठ्यपुस्तक से सत्यापन अनुशंसित)।

Step 2: व्याख्या:
वक्ता स्वयं को मानव-विजय का प्रतीक, अंधकार को मिटाने वाला और बादलों तक रथ चलाने वाला बताता है — यह मनुष्य की असीम शक्ति और साहस का उद्घोष है।

Step 3: शब्दार्थ:
स्यंदन = रथ; आयुध = शस्त्र/हथियार।

Step 4: सम्बोधन:
वक्ता (पुरुरवा/मानव-प्रतीक) स्वयं अपनी शक्ति और मानव-सामर्थ्य को सम्बोधित करके कह रहा है।

Final Answer:
इन पंक्तियों में वीर रस है, क्योंकि यह मानवीय पराक्रम और आत्म-गौरव की अभिव्यक्ति करती हैं।

OR

निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: "बाँध लेंगे क्या तुझे यह भोग के बंधन सजीले। पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले? विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन क्या डुबा देंगे, तुझे यह फूल के दल ओस गीले तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना। जाग तुझको दूर जाना।" (क) उपर्युक्त पद्यांश के पाठ और रचयिता का नाम लिखिए। (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (ग) 'क्रंदन' और 'कारा' शब्दों के अर्थ लिखिए। (घ) इन पंक्तियों में कवयित्री किसको जागने की बात कह रही हैं? (ङ) इन पंक्तियों में कवयित्री किन-किन चीजों से दूर रहने की बात कह रही हैं?

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: पाठ और रचयिता:
छायावादी शैली, स्त्रीलिंग सम्बोधन ('कवयित्री') तथा आत्मा को भोग-विलास से जगाने के भाव से यह अंश महादेवी वर्मा की काव्य-शैली से मेल खाता प्रतीत होता है (मूल पाठ्यपुस्तक से सत्यापन अनुशंसित)।

Step 2: व्याख्या:
कवयित्री आत्मा/मन को चेताती हैं कि सांसारिक भोग-विलास के सुन्दर किन्तु बन्धनकारी आकर्षण, फूलों की सुगंध और भ्रमर की गुंजार में उलझकर अपने वास्तविक लक्ष्य को न भूल जाना — अभी बहुत दूर जाना शेष है।

Step 3: शब्दार्थ:
क्रंदन = रोना/विलाप; कारा = बन्दीगृह/कैद।

Step 4: सम्बोधन:
कवयित्री अपने मन/आत्मा (या तितली के प्रतीक से मानव-मन) को जागने के लिए कह रही हैं।

Final Answer:
वे भोग-विलास के सजीले बन्धनों, फूलों की मादक सुगंध और क्षणिक सुखों के आकर्षण से दूर रहने की बात कहती हैं, ताकि साधक अपने सच्चे लक्ष्य (दूर की यात्रा) से न भटके।

5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): जैनेन्द्र कुमार

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: जीवन-परिचय एवं कृतियाँ:
जैनेन्द्र कुमार (जन्म 1905, अलीगढ़) हिन्दी के प्रमुख मनोवैज्ञानिक कथाकार माने

जाते हैं। उनकी शैली में व्यक्ति के आन्तरिक द्वन्द्व और गांधीवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव है। प्रमुख रचनाएँ: 'त्यागपत्र', 'सुनीता', 'कल्याणी' (उपन्यास) तथा 'फाँसी', 'पाजेब' (कहानी संग्रह)।

Final Answer:
जैनेन्द्र कुमार हिन्दी साहित्य के एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, जिनकी उपरोक्त कृतियाँ उनकी साहित्यिक विशिष्टता को दर्शाती हैं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): प्रो० जी० सुंदर रेड्डी

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: जीवन-परिचय एवं कृतियाँ:
(टिप्पणी: प्रो० जी० सुंदर रेड्डी अपेक्षाकृत कम-प्रचलित साहित्यकार हैं; विस्तृत जीवनी विवरण मूल पाठ्यपुस्तक से सत्यापित किया जाना चाहिए।) सामान्यतः ऐसे लेखक क्षेत्रीय हिन्दी साहित्य और भाषा-सेवा में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं, विशेषतः दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में।

Final Answer:
प्रो० जी० सुंदर रेड्डी हिन्दी साहित्य के एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, जिनकी उपरोक्त कृतियाँ उनकी साहित्यिक विशिष्टता को दर्शाती हैं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): हरिशंकर परसाई

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: जीवन-परिचय एवं कृतियाँ:
हरिशंकर परसाई (जन्म 1924, जमानी, मध्यप्रदेश) आधुनिक हिन्दी के सर्वाधिक प्रखर व्यंग्यकार माने जाते हैं। उन्होंने समाज, राजनीति और व्यवस्था की विसंगतियों पर तीखा कटाक्ष किया। प्रमुख रचनाएँ: 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'भोलाराम का जीव', 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'वैष्णव की फिसलन'।

Final Answer:
हरिशंकर परसाई हिन्दी साहित्य के एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, जिनकी उपरोक्त कृतियाँ उनकी साहित्यिक विशिष्टता को दर्शाती हैं।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी कृतियों एवं साहित्यिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: जीवन-परिचय, कृतियाँ एवं विशेषताएँ:
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (जन्म 1850, काशी) को 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का जनक' कहा जाता है। उन्होंने गद्य और पद्य दोनों में अग्रणी कार्य किया तथा हिन्दी पत्रकारिता को नई दिशा दी। प्रमुख कृतियाँ: 'अंधेर नगरी', 'भारत दुर्दशा' (नाटक), 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति'। साहित्यिक विशेषता: राष्ट्रीय चेतना और सुधारवादी दृष्टिकोण।

Final Answer:
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी काव्य-परम्परा में अपनी विशिष्ट शैली के लिए स्मरणीय हैं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी कृतियों एवं साहित्यिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: जीवन-परिचय, कृतियाँ एवं विशेषताएँ:
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्विवेदी युग के प्रमुख कवि थे। उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'प्रिय प्रवास' खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य माना जाता है, जो कृष्ण-राधा विरह पर आधारित है। अन्य रचनाएँ: 'चुभते चौपदे', 'चोखे चौपदे'। साहित्यिक विशेषता: शुद्ध खड़ी बोली में प्रबन्ध-काव्य रचना।

Final Answer:
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हिन्दी काव्य-परम्परा में अपनी विशिष्ट शैली के लिए स्मरणीय हैं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी कृतियों एवं साहित्यिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: जीवन-परिचय, कृतियाँ एवं विशेषताएँ:
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (जन्म 1896, महिषादल) छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। प्रमुख रचनाएँ: 'परिमल', 'अनामिका', 'राम की शक्तिपूजा', 'कुकुरमुत्ता'। साहित्यिक विशेषता: छन्द-मुक्त कविता के प्रवर्तक, ओजपूर्ण भाषा और सामाजिक यथार्थ का चित्रण।

Final Answer:
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी काव्य-परम्परा में अपनी विशिष्ट शैली के लिए स्मरणीय हैं।

6. कहानी कला के तत्वों के आधार पर 'बहादुर' कहानी की समीक्षा कीजिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: कथावस्तु:
'बहादुर' अमरकांत की प्रसिद्ध कहानी है, जो एक नेपाली बाल-नौकर बहादुर के एक मध्यमवर्गीय परिवार में शोषण, प्रताड़ना और अन्ततः दुखद मृत्यु की कथा कहती है।

Step 2: पात्र एवं संवाद:
बहादुर का चरित्र निश्छल और परिश्रमी है, जबकि गृहस्वामिनी का व्यवहार संदेहग्रस्त और क्रूर – संवाद यथार्थवादी एवं मध्यमवर्गीय मानसिकता को उजागर करते हैं।

Step 3: उद्देश्य:
कहानी घरेलू बाल-श्रमिकों के प्रति समाज की असंवेदनशीलता और संदेह की प्रवृत्ति पर गहरा कटाक्ष करती है।

Final Answer:
कथावस्तु, पात्र-चित्रण, संवाद और उद्देश्य – सभी दृष्टि से 'बहादुर' एक सशक्त सामाजिक यथार्थवादी कहानी है।

OR

'लाटी' कहानी के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: पात्र-परिचय:
'लाटी' यशपाल की एक मार्मिक कहानी है, जिसकी नायिका लाटी एक साधारण ग्रामीण/श्रमजीवी स्त्री है।

Step 2: चारित्रिक विशेषताएँ:
लाटी सरल, स्वाभिमानी, परिश्रमी और आत्मनिर्भर स्त्री के रूप में चित्रित है, जो विषम परिस्थितियों में भी अपनी गरिमा नहीं खोती।

Step 3: सामाजिक सन्दर्भ:
उसका चरित्र तत्कालीन ग्रामीण स्त्री की सामाजिक विवशताओं और संघर्षों का प्रतिनिधित्व करता है।

Final Answer:
लाटी का चरित्र सरलता, स्वाभिमान और सहनशीलता का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करता है।

7. 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग का सारांश लिखिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: उत्तर:
रामधारी सिंह दिनकर रचित 'रश्मिरथी' कर्ण के जीवन पर आधारित खण्डकाव्य है।

चतुर्थ सर्ग में कर्ण की महानता, उसका दानवीर स्वभाव तथा युद्ध-भूमि में उसकी वीरता का चित्रण है — इस सर्ग में इन्द्र द्वारा कवच-कुण्डल माँगे जाने पर भी कर्ण अपनी प्रतिज्ञा और दानशीलता नहीं छोड़ता, जो उसके चरित्र की उदारता और आत्म-बलिदान की भावना को उजागर करता है।

Final Answer:
'रश्मिरथी' खण्डकाव्य का यह प्रसंग/चरित्र भारतीय आदर्शों और मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति करता है।

OR

'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग (मार्ग) का कथानक संक्षेप में लिखिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: उत्तर:
'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य मातृ-पितृ भक्ति के आदर्श श्रवण कुमार की कथा पर आधारित है। पंचम सर्ग में श्रवण अपने अंधे माता-पिता को कांवड़ में बिठाकर तीर्थयात्रा कराते हुए वन में जल लाने जाता है, जहाँ राजा दशरथ के अनजाने बाण से आहत होकर वह प्राण त्याग देता है, जिससे उसके माता-पिता शोक में डूब जाते हैं।

Final Answer:
'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य का यह प्रसंग/चरित्र भारतीय आदर्शों और मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति करता है।

OR

'आलोकवृत' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग का कथानक अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: उत्तर:
'आलोकवृत' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग में नायक के जीवन-संघर्ष और आत्म-ज्ञान की ओर बढ़ते कदमों का वर्णन है। इसमें अंधकार पर प्रकाश की विजय के प्रतीकात्मक चित्रण द्वारा मानवीय चेतना के जागरण और सत्य की खोज की यात्रा को उकेरा गया है।

Final Answer:
'आलोकवृत' खण्डकाव्य का यह प्रसंग/चरित्र भारतीय आदर्शों और मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति करता है।

OR

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: उत्तर:
'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य भारत के स्वतंत्रता-संग्राम और राष्ट्रीय चेतना पर आधारित है। इसमें देशभक्तों के त्याग, बलिदान तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किए गए संघर्षों का काव्यात्मक चित्रण है, जो पाठकों में राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करता है।

Final Answer:
'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य का यह प्रसंग/चरित्र भारतीय आदर्शों और मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति करता है।

OR

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर हर्षवर्धन के चरित्र पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: उत्तर:
'त्यागपथी' खण्डकाव्य में सम्राट हर्षवर्धन को एक आदर्श, त्यागी और प्रजावत्सल शासक के रूप में चित्रित किया गया है। उनका चरित्र वीरता, धर्मपरायणता, उदारता और साहित्य-प्रेम का संगम है – वे सत्ता के मोह से ऊपर उठकर जनकल्याण और त्याग के पथ पर चलने वाले शासक के रूप में प्रस्तुत हुए हैं।

Final Answer:
'त्यागपथी' खण्डकाव्य का यह प्रसंग/चरित्र भारतीय आदर्शों और मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति करता है।

OR

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: उत्तर:
'सत्य की जीत' खण्डकाव्य महाभारत के द्रौपदी-चीरहरण प्रसंग पर आधारित है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं – सत्य और धर्म की अन्ततः विजय का सन्देश, ओजपूर्ण एवं प्रवाहमयी भाषा-शैली, तथा नारी-गरिमा एवं आत्मबल का सशक्त चित्रण, जो पाठक में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था जगाता है।

Final Answer:
'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का यह प्रसंग/चरित्र भारतीय आदर्शों और मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति करता है।

8(a). निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए: "यदा अयं षोडशवर्षदेशीयः आसीत् तदास्य कनीयसी भगिनी विषूचिकया पशुत्वं गता। वर्षत्रयानन्तरमस्य पितृव्योऽपि दिवंगतः। द्वयोरनयोः मृत्युं दृष्ट्वा आसीदस्य मनसि — कथमहं कथं वायं लोकः मृत्युभयात् मुक्तः स्यादिति चिन्तयतः एवास्य हृदि सहसैव वैराग्यप्रदीपः प्रज्वलितः। एकस्मिन् दिवसे अस्तङ्गते भगवति भास्वति मूलशङ्करः गृहमत्यजत्।"

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश मूलशंकर (स्वामी दयानन्द सरस्वती) के बाल्यकाल की उस घटना से सम्बन्धित है, जिसने उनके मन में वैराग्य जगाया।

Step 2: हिन्दी अनुवाद:
जब यह (मूलशंकर) सोलह वर्ष की आयु का था, तब इसकी छोटी बहन हैजा (विषूचिका) से मृत्यु को प्राप्त हो गई। तीन वर्ष बाद इसके चाचा का भी देहान्त हो गया। इन दोनों की मृत्यु देखकर इसके मन में विचार आया — 'मैं कैसे और यह संसार कैसे मृत्यु के भय से मुक्त हो सकता है' — ऐसा सोचते हुए इसके हृदय में सहसा वैराग्य का दीपक प्रज्ज्वलित हो उठा। एक दिन सूर्यास्त होने पर मूलशंकर ने घर त्याग दिया।

Final Answer:
यह प्रसंग मूलशंकर के मृत्यु-भय से उत्पन्न वैराग्य और गृह-त्याग की कथा का अनुवाद है।

OR

निम्नलिखित संस्कृत गद्यांश का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए: "हिन्दी-संस्कृताङ्ग्लभाषासु अस्य समानः अधिकारः आसीत्। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्थानाय हितायेति अर्थाय सः निरन्तरं प्रयत्नमकरोत्। शिक्षयैव देशे समाजे च नवीनः प्रकाशः उदेति, अतः श्रीमालवीयः वाराणस्याम् अस्य निर्माणाय अनेकान् जनान् धनम् अयाचत। महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमस्मै प्रायच्छन्, तेन निर्मितोऽयं विशालः विश्वविद्यालयः भारतीयानां दानशीलतायाः श्रीमालवीयस्य यशसः च प्रतिमूर्तिरिव विभाति।"

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना पर आधारित है।

Step 2: हिन्दी अनुवाद:
हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेज़ी — तीनों भाषाओं पर इनका (मालवीय जी का) समान अधिकार था। 'हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्थान के हित' के लिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे। शिक्षा से ही देश और समाज में नया प्रकाश उदित होता है, इसी कारण श्री मालवीय जी ने वाराणसी में इस (विश्वविद्यालय) के निर्माण हेतु अनेक लोगों से धन माँगा। इस महान ज्ञान-यज्ञ में लोगों ने प्रचुर धन दिया, जिससे यह विशाल विश्वविद्यालय बना, जो भारतीयों की दानशीलता और मालवीय जी के यश की प्रतिमूर्ति के समान सुशोभित है।

Final Answer:
यह अंश काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना में मालवीय जी के अथक प्रयास और जन-सहयोग को दर्शाता है।

8(b). निम्नलिखित संस्कृत पद्यांशों में से किसी एक का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए: "ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः। गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सत्प्रसवा इव॥"

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: सन्दर्भ:
यह श्लोक सज्जन पुरुष के स्वाभाविक गुणों के परस्पर सम्बन्ध पर आधारित एक सुभाषित है।

Step 2: हिन्दी अनुवाद:
ज्ञान होते हुए भी मौन रहना, शक्ति होते हुए भी क्षमा करना, त्याग करते हुए भी प्रशंसा की इच्छा न रखना — ये गुण सज्जन पुरुष में एक-दूसरे से स्वाभाविक रूप से जुड़े होते हैं, मानो एक अच्छी सन्तान की भाँति परस्पर सम्बद्ध हों।

Final Answer:
यह श्लोक विनम्रता, क्षमाशीलता और निःस्वार्थ त्याग को सच्चे सज्जन के स्वाभाविक गुण बताता है।

OR

निम्नलिखित संस्कृत पद्यांश का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए: "विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय। खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥"

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: सन्दर्भ:
यह सुभाषित दुर्जन (खल) और सज्जन (साधु) के गुणों के प्रयोग में अन्तर पर आधारित है।

Step 2: हिन्दी अनुवाद:
दुष्ट व्यक्ति के लिए विद्या विवाद के लिए, धन घमण्ड के लिए और शक्ति दूसरों को सताने के लिए होती है। किन्तु सज्जन के लिए इसके विपरीत — विद्या ज्ञान-प्राप्ति के

लिए, धन दान देने के लिए और शक्ति (दूसरों की) रक्षा करने के लिए होती है।

Final Answer:
यह श्लोक दुर्जन और सज्जन के स्वभाव में मौलिक अन्तर को स्पष्ट करता है।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए: कविः भोजम् अवलोक्य किम् अचिन्तयत्?

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: उत्तर (संस्कृतभाषायाम्):
(टिप्पणी: मूल पद्यांश के अभाव में सामान्य सन्दर्भ अनुसार उत्तर) कविः भोजं दृष्ट्वा तस्य उदारता, विद्वत्ता तथा काव्य-प्रेम विषये चिन्तितवान् — राजा भोजः विद्वानां आश्रयदाता इति अचिन्तयत्।

Final Answer:
(टिप्पणी: मूल पद्यांश के अभाव में सामान्य सन्दर्भ अनुसार उत्तर) कविः भोजं दृष्ट्वा तस्य उदारता, विद्वत्ता तथा काव्य-प्रेम विषये चिन्तितवान् — राजा भोजः विद्वानां आश्रयदाता इति अचिन्तयत्।

OR

निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए: कृष्णः दुर्योधनस्य किम् अपरं नाम वदति?

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: उत्तर (संस्कृतभाषायाम्):
कृष्णः दुर्योधनस्य अपरं नाम 'सुयोधनः' इति व्यंग्यपूर्वकं वदति, यत् तस्य दुष्टता एवं

अन्यायपूर्ण आचरणं सूचयति।

Final Answer:
कृष्णः दुर्योधनस्य अपरं नाम 'सुयोधनः' इति व्यंग्यपूर्वकं वदति, यत् तस्य दुष्टता एवं अन्यायपूर्ण आचरणं सूचयति।

OR

निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए: के सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्परमैत्रीसहयोगकारणानि सन्ति?

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: उत्तर (संस्कृतभाषायाम्):
पञ्चशील-सिद्धान्ताः (परस्पर अखण्डता-सम्मानः, अनाक्रमणं, अहस्तक्षेपः, समानता, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्वं) एव राष्ट्राणां परस्परमैत्रीसहयोगस्य कारणानि सन्ति।

Final Answer:
पञ्चशील-सिद्धान्ताः (परस्पर अखण्डता-सम्मानः, अनाक्रमणं, अहस्तक्षेपः, समानता, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्वं) एव राष्ट्राणां परस्परमैत्रीसहयोगस्य कारणानि सन्ति।

OR

निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए: मालवीयः कुत्र अध्यापनम् आरब्धवान्?

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: उत्तर (संस्कृतभाषायाम्):
(टिप्पणी: सत्यापन अनुशंसित) मालवीयः प्रयागे/इलाहाबादे अध्यापनकार्यम् आरब्धवान्, यतः तत्रैव सः स्वस्य शिक्षक-जीवनस्य आरम्भं कृतवान्।

Final Answer:
(टिप्पणी: सत्यापन अनुशंसित) मालवीयः प्रयागे/इलाहाबादे अध्यापनकार्यम् आरब्धवान्, यतः तत्रैव सः स्वस्य शिक्षक-जीवनस्य आरम्भं कृतवान्।

10(a). 'वात्सल्य' रस की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: परिभाषा एवं उदाहरण:
वात्सल्य रस वह रस है जिसमें संतान के प्रति माता-पिता अथवा बड़ों के स्वाभाविक स्नेह, ममता और वात्सल्य भाव की अभिव्यक्ति होती है। इसका स्थायी भाव 'वात्सल्य रति' है। उदाहरण: यशोदा का बाल कृष्ण के प्रति स्नेह-भाव — 'जसोदा हरि पालनैं झुलावै। हलरावै, दुलरावै, मल्हावै, जोई सोई कछु गावै॥' (सूरदास)।

Final Answer:
उपर्युक्त परिभाषा एवं उदाहरण द्वारा यह अवधारणा स्पष्ट हो जाती है।

OR

'रौद्र' रस की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: परिभाषा एवं उदाहरण:
रौद्र रस वह रस है जिसमें क्रोध के स्थायी भाव का आस्वादन होता है। यह शत्रु के प्रति अपमान, अन्याय अथवा वैर-भाव से उत्पन्न होता है। उदाहरण: महाभारत में द्रौपदी-चीरहरण के समय भीम की क्रोधपूर्ण प्रतिज्ञा — 'दुःशासन की छाती का रक्त पीकर ही चैन लूँगा' जैसे प्रसंग रौद्र रस के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

Final Answer:
उपर्युक्त परिभाषा एवं उदाहरण द्वारा यह अवधारणा स्पष्ट हो जाती है।

10(b). 'उत्प्रेक्षा' अलंकार की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: परिभाषा एवं उदाहरण:
जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना या कल्पना व्यक्त की जाए तथा 'मनु', 'जनु', 'जानो', 'मानो' आदि शब्दों का प्रयोग हो, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उदाहरण: 'सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलोने गात। मनौ नीलमणि सैल पर आतपु पर्यो प्रभात॥' — यहाँ श्याम शरीर पर पीत वस्त्र की शोभा को नीलमणि पर्वत पर प्रभात की धूप की कल्पना से व्यक्त किया गया है।

Final Answer:
उपर्युक्त परिभाषा एवं उदाहरण द्वारा यह अवधारणा स्पष्ट हो जाती है।

OR

'अतिशयोक्ति' अलंकार की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: परिभाषा एवं उदाहरण:
जहाँ किसी वस्तु या घटना का इतना बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाए कि वह लोक-सीमा का अतिक्रमण कर जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। उदाहरण: 'हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग। लंका सिगरी जल गई, गए निशाचर भाग॥' — यहाँ आग लगने से पहले ही सम्पूर्ण लंका के जल जाने का अतिरंजित वर्णन है।

Final Answer:
उपर्युक्त परिभाषा एवं उदाहरण द्वारा यह अवधारणा स्पष्ट हो जाती है।

10(c). 'रोला' छन्द की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: परिभाषा एवं उदाहरण:
रोला एक मात्रिक छन्द है जिसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं, जिनका विभाजन 11 और 13 मात्राओं पर यति के साथ होता है, तथा चरण के अन्त में गुरु-लघु या लघु-गुरु रहना आवश्यक है। यह दोहा के साथ मिलकर 'छप्पय' छन्द भी बनाता है। उदाहरण के रूप में भक्ति एवं वीर काव्य में रोला छन्द के अनेक पद्य मिलते हैं जिनमें 11+13 मात्राओं का विभाजन स्पष्ट देखा जा सकता है।

Final Answer:
उपर्युक्त परिभाषा एवं उदाहरण द्वारा यह अवधारणा स्पष्ट हो जाती है।

OR

'कुण्डलिया' छन्द की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: परिभाषा एवं उदाहरण:
कुण्डलिया एक मिश्रित मात्रिक छन्द है जो दोहा और रोला के संयोग से बनता है — पहले एक दोहा और फिर एक रोला, इस प्रकार कुल छह चरण होते हैं। इसकी विशेषता यह है कि दोहे का अन्तिम चरण रोला के प्रथम चरण के रूप में तथा कविता का प्रथम शब्द अन्त में पुनः प्रयुक्त होता है। यह नीति और उपदेशपरक विषयों के

लिए विशेष रूप से प्रयुक्त होता है, जैसा रहीम और वृन्द के कुण्डलिया छन्दों में देखा जाता है।

Final Answer:
उपर्युक्त परिभाषा एवं उदाहरण द्वारा यह अवधारणा स्पष्ट हो जाती है।

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: मेरे विद्यालय का वार्षिकोत्सव

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: भूमिका:
मेरे विद्यालय में प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस वर्ष का उत्सव फरवरी माह में आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जिले के जिलाधिकारी महोदय पधारे। कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती वन्दना से हुआ, तत्पश्चात छात्र-छात्राओं ने नृत्य, नाटक, कविता-पाठ तथा देशभक्ति गीतों की सुन्दर प्रस्तुतियाँ दीं। विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने वर्षभर की शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया तथा मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया गया। खेलकूद, विज्ञान-प्रदर्शनी तथा हस्तकला की प्रदर्शनी भी आयोजित हुई, जिसे अभिभावकों ने बहुत सराहा। अन्त में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस उत्सव ने विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहयोग की भावना और अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया। यह दिन सदैव स्मरणीय रहेगा।

Final Answer:
उपर्युक्त निबन्ध विषय 'मेरे विद्यालय का वार्षिकोत्सव' पर एक सुसंगठित प्रस्तुति है, जिसमें भूमिका, विषय-वस्तु और निष्कर्ष का समावेश है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: कबीरदास की प्रासंगिकता

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: भूमिका:
कबीरदास मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन के निर्गुण संत कवि थे, जिनकी वाणी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके समय में थी। उन्होंने जाति-पाति, ऊँच-नीच, धार्मिक आडम्बर और पाखण्ड का घोर विरोध किया – 'जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिये ज्ञान' जैसी पंक्तियाँ आज भी सामाजिक समरसता का सन्देश देती हैं। वर्तमान युग में जब साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास और सामाजिक भेदभाव व्याप्त हैं, कबीर की उलटबांसियाँ और दोहे हमें सहिष्णुता, आत्म-चिन्तन तथा सच्ची भक्ति की राह दिखाते हैं। उनका सन्देश 'मन ही में मीत बसे रघुराई' आन्तरिक शुद्धता पर बल देता है, न कि बाह्याडम्बर पर। आज के भौतिकवादी युग में भी कबीर की सहज साधना, समानता और मानवता का सन्देश उतना ही मूल्यवान है। इसी कारण कबीरदास केवल इतिहास के कवि नहीं, अपितु हर युग के प्रासंगिक विचारक हैं।

Final Answer:
उपर्युक्त निबन्ध विषय 'कबीरदास की प्रासंगिकता' पर एक सुसंगठित प्रस्तुति है, जिसमें भूमिका, विषय-वस्तु और निष्कर्ष का समावेश है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: जल ही जीवन है

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: भूमिका:
जल प्रकृति का अमूल्य उपहार है, जिसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी असम्भव है। मानव, पशु-पक्षी, वनस्पति – सभी के अस्तित्व का आधार जल ही है। मानव शरीर का लगभग सत्तर प्रतिशत भाग जल से बना है, तथा कृषि, उद्योग और दैनिक जीवन के हर क्षेत्र में इसकी अनिवार्य भूमिका है। किन्तु आज बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण तथा जल-प्रदूषण के कारण स्वच्छ जल का संकट गहराता जा रहा है।

भूजल स्तर निरन्तर घट रहा है और अनेक क्षेत्रों में पेयजल की भारी कमी है। हमें वर्षा-जल संचयन, जल के विवेकपूर्ण उपयोग तथा नदियों-तालाबों के संरक्षण जैसे उपायों को अपनाना होगा। विद्यालय एवं समाज स्तर पर जल-संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना अत्यन्त आवश्यक है। यदि हम अभी नहीं चेते तो आने वाली पीढ़ियाँ जल के अभाव में गम्भीर संकट का सामना करेंगी। अतः स्पष्ट है — जल है तो कल है।

Final Answer:
उपर्युक्त निबन्ध विषय 'जल ही जीवन है' पर एक सुसंगठित प्रस्तुति है, जिसमें भूमिका, विषय-वस्तु और निष्कर्ष का समावेश है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: आतंकवाद : कारण और निवारण

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: भूमिका:
आतंकवाद आज विश्व की सबसे गम्भीर समस्याओं में से एक है, जो निर्दोष जन-जीवन और शान्ति के लिए भीषण खतरा बना हुआ है। इसके प्रमुख कारणों में धार्मिक कट्टरता, राजनीतिक असन्तोष, बेरोज़गारी, गरीबी, सीमा-पार से प्रशिक्षण व आर्थिक सहायता, तथा कुछ शक्तियों द्वारा युवाओं का भावनात्मक शोषण प्रमुख हैं। आतंकवादी संगठन भोले-भाले युवाओं को गुमराह कर हिंसा के मार्ग पर धकेलते हैं। इसके निवारण हेतु सर्वप्रथम कड़ी सुरक्षा-व्यवस्था, सीमा-सुरक्षा तथा गुप्तचर तंत्र को सुदृढ़ करना आवश्यक है। इसके साथ-साथ शिक्षा, रोज़गार के अवसर तथा सामाजिक समरसता को बढ़ावा देकर मूल कारणों पर प्रहार करना चाहिए। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सभी राष्ट्रों को मिलकर आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट रणनीति अपनानी होगी। युवाओं में देशप्रेम, सहिष्णुता और मानवीय मूल्यों का संचार कर ही हम आतंकवाद की जड़ों को समाप्त कर सकते हैं। यह तभी सम्भव है जब समाज, सरकार और विश्व-समुदाय संगठित प्रयास करें।

Final Answer:
उपर्युक्त निबन्ध विषय 'आतंकवाद : कारण और निवारण' पर एक सुसंगठित प्रस्तुति है, जिसमें भूमिका, विषय-वस्तु और निष्कर्ष का समावेश है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: समय प्रबन्धन कौशल

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: भूमिका:
समय प्रबन्धन जीवन में सफलता प्राप्त करने की एक अनिवार्य कला है। जो व्यक्ति अपने समय का सुनियोजित उपयोग करना जानता है, वही जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ता है। समय प्रबन्धन का अर्थ है — कार्यों को प्राथमिकता के अनुसार व्यवस्थित करना, समय-सारणी बनाना और आलस्य तथा दिखावटी व्यस्तता से बचना। विद्यार्थी जीवन में समय प्रबन्धन विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है — पढ़ाई, खेल, विश्राम तथा अन्य गतिविधियों के लिए उचित समय निर्धारित करने से न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन सुधरता है, बल्कि मानसिक तनाव भी कम होता है। लक्ष्य निर्धारण, कार्य-सूची बनाना, अनावश्यक व्यवधानों (जैसे अत्यधिक मोबाइल प्रयोग) से बचना तथा नियमितता बनाए रखना समय प्रबन्धन के प्रमुख सूत्र हैं। जो विद्यार्थी समय का सदुपयोग करना सीख लेते हैं, वे जीवन में अनुशासित, आत्मविश्वासी और सफल बनते हैं। अतः समय प्रबन्धन कौशल हर व्यक्ति के लिए जीवन-पर्यन्त उपयोगी सम्पत्ति है।

Final Answer:
उपर्युक्त निबन्ध विषय 'समय प्रबन्धन कौशल' पर एक सुसंगठित प्रस्तुति है, जिसमें भूमिका, विषय-वस्तु और निष्कर्ष का समावेश है।

12(a)(i). 'धनुष्टंकार' का सन्धि-विच्छेद है

(A) धनुम् + टंकार:

(B) धनु: + टंकार:

(C) धनुष + टंकार:

(D) धनुष् + टंकार:

Correct Answer: (B) धनु: + टंकार:

Solution:

Step 1: समझना:
'धनुष्टंकार' विसर्ग-सन्धि का उदाहरण है, जिसमें 'धनुः' के विसर्ग (:) का 'टवर्ग' (ट) से पहले 'ष्' में परिवर्तन होता है।

Final Answer:
धनुः + टंकार:

12(a)(ii). 'हरि वन्दे' का सन्धि-विच्छेद होगा

(A) हरिम् + वन्दे

(B) हरि + वन्दे

(C) हरिम् + वन्दे (पुनः)

(D) हरी + वन्दे

Correct Answer: (A) हरिम् + वन्दे

Solution:

Step 1: समझना:
'हरि वन्दे' में द्वितीया विभक्ति के रूप 'हरिम्' के म् का लोप होकर अनुस्वार में परिवर्तन तथा तत्पश्चात सन्धि होती है।

Final Answer:
हरिम् + वन्दे

12(a)(iii). 'नयनम्' का सन्धि-विच्छेद है

(A) ने + अनम्

(B) नय + नम्

(C) नै + नम्

(D) न + यनम्

Correct Answer: (C) नै + नम्

Solution:

Step 1: समझना:
'नयनम्' शब्द गुण-सन्धि के नियम से बनता है — 'नै' (ऐ) के बाद 'नम्' आने पर 'ऐ + अ = अय' नियम से 'नयनम्' रूप बनता है।

Final Answer:
नै + नम्

12(b). निम्नलिखित में से किसी एक पद का विग्रह करके समास-भेद लिखिए: महाशयः

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: विग्रह एवं समास-भेद:
यह कर्मधारय समास का उदाहरण है — विग्रह: 'महान् च असौ आशयः च' अर्थात् जिसका आशय (हृदय/मन) महान् है, वह महाशय। यहाँ विशेषण-विशेष्य के मध्य कर्मधारय समास है।

Final Answer:
'महाशयः' — यह कर्मधारय समास का उदाहरण है

OR

निम्नलिखित में से किसी एक पद का विग्रह करके समास-भेद लिखिए: सचक्रम्

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: विग्रह एवं समास-भेद:
यह अव्ययीभाव समास का उदाहरण है — विग्रह: 'चक्रेण सह' अर्थात् चक्र के साथ। यहाँ 'स' उपसर्ग 'सहित/साथ' के अर्थ में प्रयुक्त होकर अव्ययीभाव समास बनाता है।

Final Answer:
'सचक्रम्' — यह अव्ययीभाव समास का उदाहरण है

OR

निम्नलिखित में से किसी एक पद का विग्रह करके समास-भेद लिखिए: चराचरम्

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: विग्रह एवं समास-भेद:
यह द्वन्द्व समास का उदाहरण है — विग्रह: 'चरम् च अचरम् च' अर्थात् चलने वाले (जीव) और न चलने वाले (जड़/स्थावर) दोनों। दोनों पदों की प्रधानता होने से यह द्वन्द्व समास है।

Final Answer:
'चराचरम्' — यह द्वन्द्व समास का उदाहरण है

13(a)(i). 'जितः' शब्द में प्रत्यय है

(A) क्त्वा

(B) क्त

(C) तव्यत्

(D) अनीयर्

Correct Answer: (B) क्त

Solution:

Step 1: समझना:
'जितः' शब्द 'जि' (जीतना) धातु में भूतकालिक कृदन्त प्रत्यय 'क्त' लगाकर बनता है — जि + क्त = जित।

Final Answer:
क्त

13(a)(ii). 'धृत्वा' शब्द में प्रत्यय है

(A) क्त्वा

(B) क्त

(C) अनीयर्

(D) मतुप्

Correct Answer: (A) क्त्वा

Solution:

Step 1: समझना:
'धृत्वा' शब्द 'धृ' (धारण करना) धातु में संबंधक भूत कृदन्त प्रत्यय 'क्त्वा' लगाकर

बनता है — धृ + क्त्वा = धृत्वा (धारण करके)।

Final Answer:
क्त्वा

13(a)(iii). 'पक्तव्यः' शब्द में प्रत्यय है

(A) तव्यत्

(B) क्त

(C) मतुप्

(D) क्त्वा

Correct Answer: (A) तव्यत्

Solution:

Step 1: समझना:
'पक्तव्यः' शब्द 'पच्' (पकाना) धातु में विधि/कर्तव्यबोधक कृदन्त प्रत्यय 'तव्यत्' लगाकर बनता है — पच् + तव्यत् = पक्तव्यः (पकाया जाना चाहिए)।

Final Answer:
तव्यत्

13(b). रेखांकित पदों में से किसी एक पद में प्रयुक्त विभक्ति तथा सम्बन्धित नियम लिखिए: लङ्कायाम् निकषाः सागरः अस्ति

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: विभक्ति एवं नियम:
यहाँ 'लङ्कायाम्' में सप्तमी विभक्ति है — नियम: 'निकषा' शब्द के योग में (समीपता के अर्थ में) सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

Final Answer:
यहाँ 'लङ्कायाम्' में सप्तमी विभक्ति है — नियम: 'निकषा' शब्द के योग में (समीपता के अर्थ में) सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

OR

रेखांकित पदों में से किसी एक पद में प्रयुक्त विभक्ति तथा सम्बन्धित नियम लिखिए:
उपाध्यायः छात्रैः सह स्नाति

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: विभक्ति एवं नियम:
यहाँ 'छात्रैः' में तृतीया विभक्ति है — नियम: 'सह' अव्यय के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है (जिसके साथ क्रिया की जाए)।

Final Answer:
यहाँ 'छात्रैः' में तृतीया विभक्ति है — नियम: 'सह' अव्यय के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है (जिसके साथ क्रिया की जाए)।

OR

रेखांकित पदों में से किसी एक पद में प्रयुक्त विभक्ति तथा सम्बन्धित नियम लिखिए: सुग्रीवः रामस्य सखा आसीत्

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: विभक्ति एवं नियम:
यहाँ 'रामस्य' में षष्ठी विभक्ति है — नियम: सम्बन्ध (स्वामित्व/सम्बन्ध बोधक) अर्थ में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

Final Answer:
यहाँ 'रामस्य' में षष्ठी विभक्ति है — नियम: सम्बन्ध (स्वामित्व/सम्बन्ध बोधक) अर्थ में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

14. छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई को व्यायाम का महत्व बताते हुए पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Step 1: पत्र प्रारूप:
परीक्षा भवन,
दिनांक: ...

प्रिय अनुज,
सस्नेह आशीर्वाद।

Step 2: विषय-वस्तु:
आशा है तुम छात्रावास में स्वस्थ और सानन्द होगे। मुझे ज्ञात हुआ है कि तुम पढ़ाई में इतने व्यस्त रहते हो कि नियमित व्यायाम नहीं कर पाते। यह ठीक नहीं है। व्यायाम केवल शरीर को स्वस्थ ही नहीं रखता, बल्कि मन को भी प्रसन्न और एकाग्र बनाता है, जिससे पढ़ाई में भी मन लगता है। प्रतिदिन प्रातः थोड़ी देर टहलना, योगासन अथवा हल्का व्यायाम करने से रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और आलस्य दूर होता है। नियमित व्यायाम से नींद भी अच्छी आती है और थकान कम महसूस होती है। अतः मेरा सुझाव है कि तुम प्रातःकाल कम से कम आधा घण्टा व्यायाम अवश्य किया करो और छात्रावास के अन्य साथियों को भी इसके लिए प्रेरित करो।

Final Answer:
शेष कुशल है। पत्र का उत्तर अवश्य देना।
तुम्हारा बड़ा भाई/बहन

OR

स्वास्थ्य केंद्र पर आवश्यक सुविधाओं के अभाव के कारण रोगियों को समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या पर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कराने के लिए किसी समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

Step 1: पत्र प्रारूप:
सेवा में,
सम्पादक महोदय,
दैनिक (समाचार पत्र का नाम),
(नगर)

विषय: स्थानीय स्वास्थ्य केंद्र में सुविधाओं के अभाव की समस्या।

महोदय,

Step 2: विषय-वस्तु:
आपके लोकप्रिय समाचार पत्र के माध्यम से मैं प्रशासन का ध्यान अपने क्षेत्र के स्वास्थ्य केंद्र की दयनीय स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता/चाहती हूँ। यहाँ न तो पर्याप्त डॉक्टर उपलब्ध हैं और न ही आवश्यक दवाइयाँ। सफाई-व्यवस्था भी अत्यन्त खराब है तथा एम्बुलेंस जैसी आपातकालीन सुविधा भी नदारद है। इसके कारण गरीब एवं ग्रामीण रोगियों को दूर के अस्पतालों में जाना पड़ता है, जिससे समय पर उपचार न मिलने से कई बार स्थिति गम्भीर हो जाती है। मेरा अनुरोध है कि सम्बन्धित अधिकारी शीघ्र इस ओर ध्यान देकर आवश्यक डॉक्टर, दवाइयाँ एवं संसाधन उपलब्ध कराएँ, ताकि क्षेत्र की जनता को उचित चिकित्सा सुविधा मिल सके।

Final Answer:
आशा है आप मेरे इस पत्र को अपने पत्र में प्रकाशित कर जनहित में उचित कार्यवाही हेतु सम्बन्धित अधिकारियों तक यह समस्या पहुँचाएँगे।
भवदीय, (नाम एवं पता)